अंध विश्वास के विरुद्ध आगे आए जादूगर!

भारत डोगरा

हाल ही में दिल्ली-मथुरा मार्ग पर स्थित पलवल शहर में आयोजित राष्ट्रीय जादू उत्सव में एक नया आयाम जुड़ गया जब इस उत्सव के मुख्य आयोजक राष्ट्रीय प्रगतिशील जादू महासंघ के अध्यक्ष श्रीराम ने घोषणा की कि अब जादूगर समाज सुधार के व्यापक सरोकारों से जुड़ेंगे और विशेषकर समाज में व्याप्त अंधविश्वासों को दूर करने में अपना योगदान देंगे।

इस भूमिका का स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने आगे कहा कि जहां जादूगर तरह-तरह के जादू के खेल दिखाकर यह स्वीकार करते हैं कि यह हाथ की सफाई और सूझ-बूझ का कमाल है, वहीं कुछ पाखंडी लोग इसी तरह के जादू के खेल व ट्रिक्स का दुरूपयोग 'चमत्कार' के रूप में करते हैं। वे इसे कई तरह के पाखंडी क्रिया-कलापों से जोड़कर इन मैजिक ट्रिक्स का उपयोग लोगों को ठगने के लिए करते हैं।

उदाहरण के लिए कुछ व्यक्ति चमत्कारी ढंग से भस्म निकालने का दावा करते हैं तो कुछ व्यक्ति किसी वस्तु की मात्रा को दुगना करने का दावा करते हैं। पाखंडी व ठग व्यक्ति ऐसी हाथ की सफाई को चमत्कार के रूप में प्रचारित कर समाज की बहुत क्षति करते हैं और लोगों को गुमराह करते हैं। कई बार तो यह पाखंड बड़े स्तर पर लाखों लोगों को गुमराह करने के लिए अत्यंत संगठित ढंग से किया जाता है।

इस स्थिति में यदि जादूगर जगह-जगह हाथ की सफाई के ऐसे ही खेल प्रस्तुत कर स्पष्ट घोषणा कर दें कि यह महज हाथ का कौशल हैं, इसमें कोई चमत्कार नहीं है तो इससे समाज में अंध विश्वास दूर करने में मदद मिलेगी। यह ज़रूरी नहीं है कि जादूगर विस्तार से बताएं कि 'मैजिक ट्रिक्स' कैसे की गई। ऐसा करने से शायद उनके व्यवसाय की क्षति हो। पर यदि वे तथाकथित 'चमत्कार' को हाथ के कौशल के रूप में बार-बार प्रस्तुत कर दें तो इससे भी चमत्कारों से जुड़ी ठगी व पाखंड को रोकने में सहायता मिलेगी।

यह जादूगरों के संगठन की एक अच्छी पहल है कि उसने अंध विश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाई है। यह तो आने वाला समय ही बताएगा कि वास्तव में जादूगरों की यह अंध विश्वास विरोधी भूमिका कितनी असरदार हो सकेगी। पर कम से कम इस बात का तो स्वागत होना चाहिए कि जादूगरों के एक राष्ट्रीय उत्सव, जहां केरल से पंजाब तक विभिन्न राज्यों के जादूगर उपस्थित थे, में जादूगरों की ऐसी व्यापक सामाजिक भूमिका की चर्चा की गई। महासंघ के अध्यक्ष श्रीराम ने स्वयं स्वीकार किया कि अभी अधिकांश जादूगर इस सार्थक सामाजिक बदलाव की भूमिका से जुड़ने के लिए तैयार नहीं हैं परंतु इस दिशा में प्रयास आरंभ हो चुके हैं।

राष्ट्रीय प्रगतिशील जादू महासंघ का मानना है कि जादू का खेल भी एक कला है और कलाकारों की भूमिका में पूर्णता तभी आती है जब वे समाज के व्यापक सरोकारों से जुड़ते हैं। इस तरह अंध विश्वास विरोधी अभियान से जुड़कर जादूगर अपनी कला को वह व्यापक सामाजिक मान्यता व प्रतिष्ठा दिला सकेंगे जिसकी यह कला हकदार है, और साथ ही समाज को अंध विश्वासों से मुक्त होने में मदद मिलेगी। यह जादूगरों की एक अच्छी पहल है जिसमें कई बहुत महत्वपूर्ण व सार्थक संभावनाएं है। समाज को चाहिए कि इस पहल को प्रोत्साहित करे। ***(स्रोत फीचर्स)***